भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3052
उत्तर देने की तारीख 27.03.2025

भारतीय संस्कृति को सौम्य शक्ति के रूप में बढ़ावा देना

3052. **श्रीमती संगीता यादव :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारतीय संस्कृति को सौम्य शक्ति के रूप में बढ़ावा देने के लिए कोई विशेष नीति लागू कर रही है;
(ख) क्या सरकार भारतीय कला, शिल्प, संगीत और योग को वैश्विक मंच पर सशक्त रूप से प्रस्तुत करने की योजना बना रही है;
(ग) क्या सरकार सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल साधनों और सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग करने की योजना बना रही है; और
(घ) क्या सरकार भारतीय विश्वविद्यालयों में पारंपरिक ज्ञान और संस्कृति आधारित पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए कोई कदम उठा रही है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (ग): संस्कृति मंत्रालय द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने और भारत की वैश्विक छवि को संवर्धित करने के लिए 'वैश्विक भागीदारी स्कीम' कार्यान्वित की जाती है।

इस स्कीम के मुख्य उद्देश्यों में विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंध मजबूत करना, द्विपक्षीय सांस्कृतिक संपर्कों को बढ़ावा देना, विश्व मंच पर भारत की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाना और इनबाउंड पर्यटन को प्रोत्साहित करना शामिल हैं।

वैश्विक भागीदारी स्कीम का संचालन विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से किया जाता है ताकि निम्नलिखित घटकों के माध्यम से इसके उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके:

I) **भारत महोत्सव:**

भारतीय कला रूपों में अभ्यासरत कलाकारों को 'भारत महोत्सव' के बैनर तले विदेश में प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाता है। लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक रंगमंच और कठपुतली कला, शास्त्रीय और पारंपरिक नृत्य, प्रयोगात्मक/समकालीन नृत्य, शास्त्रीय/अर्धशास्त्रीय संगीत, रंगमंच आदि सहित लोक कलाओं जैसे विविध सांस्कृतिक क्षेत्रों के कलाकार विदेश में 'भारत महोत्सव' में प्रदर्शन करते हैं।

II) **भारत-विदेश मैत्री सांस्कृतिक सोसाइटियों को सहायता अनुदान:** भारत और संबंधित विदेश के बीच घनिष्ठ मैत्री और सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देने के प्रयोजनार्थ हमारे भारतीय मिशनों के माध्यम से विदेशों में सक्रिय रूप से कार्यरत भारत-विदेश मैत्री सांस्कृतिक सोसाइटियों को सहायता अनुदान जारी किया जाता है।

विदेश मंत्रालय (एमईए) के अधीन एक स्वायत्त संगठन, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) अपने अधिदेश के अनुसार, विदेशों में स्थित अपने सांस्कृतिक केंद्रों और मिशनों/पोस्टों के माध्यम से विश्व भर में भारतीय संस्कृति (लोक कलाओं और संस्कृति सहित) को बढ़ावा देता है। उनके द्वारा संचालित कार्यकलापों में अन्य बातों के साथ-साथ योग, नृत्य, संगीत (गायन और वाद्य), दृश्य कला प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान करना, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और भारतीय पर्वों को मनाना शामिल है।

(ग): संस्कृति मंत्रालय भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है।

आईसीसीआर, एमईए ने अपने वैश्विक संचालन को केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित करने के लिए (i) एआईएमएस (कार्यकलाप सूचना प्रबंधन प्रणाली) पोर्टल विकसित किया है, जिससे आईसीसीआर, भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों और दुनिया भर में भारतीय मिशनों/पोस्टों के बीच निर्बाध समन्वय की सुविधा मिलती है: (ii) भारत में अध्ययन करने के इच्छुक विदेशी छात्रों के लिए आवेदन और प्रवेश प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए ए2ए (प्रवेश 2 पूर्व छात्र) पोर्टल; और (iii) ज्ञान सेतु एप्लीकेशन जिसका उद्देश्य छात्रों और विश्वविद्यालयों को छात्रवृत्ति बकाया जारी करने को सुव्यवस्थित और स्वचालित करना है। आईसीसीआर भारत की उदार सत्ता (सॉफ्ट पावर) को बढ़ाने और वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से लाभ उठाता है। आईसीसीआर, आईसीसीआर की आधिकारिक वेबसाइट का प्रबंधन भी करता है, जो आईसीसीआर के कार्यकलापों और पहलों से संबंधित सभी सूचनाओं के लिए वन-स्टॉप गंतव्य के रूप में कार्य करता है।

(घ): आईसीसीआर ने पारंपरिक भारतीय ज्ञान पर लघु लेकिन विशिष्ट पाठ्यक्रमों के लिए एक ऑनलाइन मंच "पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों का सार्वभौमीकरण (यूटीआईकेएस)" शुरू किया है, जो भारतीय संस्कृति, वेदों और उपनिषदों से लेकर प्राचीन भारतीय ग्रंथों, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और कलात्मक स्रोतों की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में प्रारंभिक ज्ञान के एकल खिड़की स्रोत के रूप में है और साथ ही उन लोगों को सूक्ष्म तरीके से भारतीय संस्कृति से परिचित कराने में मदद करता है, जिनके पास पहले से ही बुनियादी समझ है, लेकिन वे विविध भारतीय परंपराओं की गहन समझ की तलाश में हैं।

*****